HISTORY

B.A.(Hon's)PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-I (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 17

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें 👇👇👇

https://youtu.be/lbF3AUeMlog

✓✓प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (भाग- 7)

✓वैदिक (धार्मिक)स्रोत ( लौकिक साहित्य....)

## ✓लौकिक साहित्य (SECULAR LITERATURE)

लौकिक साहित्य के साहित्य के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं समसामयिक साहित्य आते हैं, ऐसे साहित्य को धर्मेतर साहित्य भी कहते हैं । इस प्रकार की कृतियों से तत्कालीन भारतीय समाज के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को जानने में काफी मदद मिलती है। ऐसी रचनाओं में सर्वप्रथम उल्लेख अर्थशास्त्र का किया जाता है ।

✓अर्थशास्त्र -सम्भवतः आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) द्वारा रचित इस कृति को भारत का पहला राजनीति का ग्रंथ माना जाता है। लगभग 6000 श्लोकों वाले इस ग्रंथ (अर्थशास्त्र) से मौर्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति की स्पष्ट जानकारी मिलती है। 15 खण्डों में विभाजित इस ग्रंथ का द्वितीय एवं तृतीय खण्ड सर्वाधिक प्राचीन है।

✓मुद्राराक्षस - चौथी शती का उत्तरार्द्ध एवं पांचवी शती ई० के पूर्वार्द्ध में विशाखदत्त द्वारा रचित इस ग्रंथ से चन्द्रगुप्त मौर्य एवं उनके गुरु चाणक्य के विषय में और साथ ही नंद वंश के पतन एवं मौर्य वंश की स्थापना के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

✓पाणिनिकृत अष्टाध्यायी एवं महर्षि पतञ्जलि प्रणीत महाभाष्य वैसे तो व्याकरण के ग्रंथ माने जाते है किन्तु इन ग्रंथों में कहीं-कहीं राजाओं-महाराजाओं एवं जनतंत्रों के घटनाचक्र का विवरण मिलता है।

✓गार्गी संहिता-प्रथम शताब्दी के लगभग लिखी गयी इस पुस्तक में यूनानी आक्रमण का लेख मिलता है।

✓मालविकाग्निमित्रम् - चौथी शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं पांचवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कालिदास द्वारा रचित इस संस्कृत ग्रंथ से पुष्यमित्र शुंग एवं उसके पुत्र अग्निमित्र के समय के राजनीतिक घटनाचक्र तथा शुंग एवं यवन संघर्ष का उल्लेख मिलता है।

✓हर्षचरित- सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में संस्कृत के विद्वान सम्राट हर्ष के राजकवि बाणभट्ट द्वारा रचित इस ग्रंथ से हर्ष के जीवन एवं हर्ष के समय के भारत के इतिहास पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है।

✓कामन्दकीय नीतिशास्त्र -7-8 वीं शताब्दी के लगभग कामन्दक द्वारा इस ग्रंथ की रचना की गयी । इससे उस समय के आचार-व्यवहार के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

✓ब्राहस्पत्य अर्थशास्त्र- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के समान ही बृहस्पति ने भी 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रंथ की रचना की । इसका रचनाकाल 900-1000 ई० माना जाता है। इस ग्रंथ में राजकीय कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है।

✓स्वप्नवासवदत्तम् - छठी शती ई० में महाकवि भास द्वारा रचित इस कृति वत्सराज उदयन एवं चण्ड प्रद्योत के सम्बन्धों का उल्लेख मिलता है।

✓मंजूश्रीमूलकल्प - इस ग्रंथ में 700 से 750 ई० तक के भारतीय इतिहास का विवरण मिलता है । यह ग्रंथ बौद्ध धर्म की महायान शाखा से भी सम्बन्धित है।

✓मृच्छकटिकम्-शूद्रक द्वारा रचित इस नाटक से गुप्तकालीन सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है।

✓नवसाहसांकचरित - ग्यारहवीं शती ई० में पद्मगुप्त परिमल द्वारा रचित इस ग्रंथ से परमार वंश, सिंधुराज नवसाहसांक के इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है । इस ग्रंथ को संस्कृत साहित्य का प्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य माना जाता है।

✓राजतरंगिणी- 1148 से 1150 के बीच इस ग्रंथ की रचना कल्हण ने की। कश्मीर के इतिहास पर आधारित इस ग्रंथ की रचना में कल्हण ने ग्यारह अन्य ग्रंथों का सहयोग लिया है। जिसमें अब केवल नीलमत पुराण ही उपलब्ध है।

✓विक्रमांकदेवचरित - ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस ग्रंथ की रचना कश्मीरी कवि बिल्हण ने की। इस ग्रंथ से चालुक्य राजवंश, विशेषकर विक्रमादित्य षष्ट के विषय में जानकारी मिलती है।

✓कुमारपालचरित- लगभग 1089-1173 के बीच इस ग्रंथ की रचना हेमचन्द्र ने की। बीस सर्गों से विभाजित इस ग्रंथ से चालुक्य वंशीय शासकों के विस्तृत इतिहास की जानकारी मिलती है। बीस सर्गों में प्रथम बारह सर्ग संस्कृत भाषा में एवं अन्तिम आठ सर्ग प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं। इस ग्रंथ को द्वयाश्रय भ्री कहा जाता है।

✓प्रबन्धचिन्तामणि- 1305 में इसकी रचना मेरुतुंग आचार्य ने की। यह ग्रंथ जैन साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह पाच खण्डों में विभाजित है, इन खण्डों से क्रमश: विक्रमांक, सातवाहन मूलराज, मुंज, नृपति भोज, सिद्धराज, जयसिंह, कुमार पाल, लक्ष्मण सेन, जयचन्द्र आदि के विषय में जानकारी मिलती है।

✓कीर्ति कौमुदी- सोमेश्वर द्वारा रचित इस काव्य से चालुक्य वंशीय इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है।

✓बसन्त विलास - महाकवि बाल चन्द्र द्वारा रचित चौदह सर्गों वाले इस ग्रंथ में वास्तुपाल के उदारवादी कार्यों का उल्लेख मिलता है। साथ ही चालुक्य वंशीय राजनीति के बारे में विवरण मिलते हैं।

✓मत्तविलास प्रहसन- पल्लव नरेश महेन्द्र विक्रम द्वारा 7 वीं शती में रचित इस ग्रंथ से तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के बारे में विवरण मिलता है।

✓अवन्तिसुन्दरी कथा- महाकवि दण्डी द्वारा रचित इस ग्रंथ से पल्लवों के इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है।

✓पृथ्वीराज विजय - 1191 से 1193 के बीच इस ग्रंथ की रचना कश्मीरी पण्डित जयनक ने की। इस ग्रंथ से पृथ्वीराज तृतीय के विषय में जानकारी मिलती है।

✓गौड़वहो- वाक्पतिराज द्वारा प्राकृत भाषा में रचित इस ग्रंथ से कनौज नरेश यशोवर्मा के विजयों की विषय में जानकारी मिलती हैं।

दक्षिण भारत का प्रारम्भिक इतिहास 'संगम साहित्य' से ज्ञात होता है । सुदूर दक्षिण के पल्लव और चोल शासकों का इतिहास नन्दिकलम्बकम, कलिंगनुपर्णि, चोल चरित आदि से प्राप्त होता है।

## आगे भी यह जारी है...........

## !!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!!